



(हॉकी हमारे देश का राष्ट्रीय खेल है। इस खेल की ओलंपिक प्रतियोगिताओं में भारत प्रायः विजयी होता आया है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त हॉकी खिलाड़ी कुँवर दिग्विजय सिंह 'बाबू' ने हेलसिंकी (फिनलैंड) में हुए हॉकी मैच का संस्मरणात्मक परिचय दिया है।)

बहुत से लोगों का ऐसा विचार है कि खेल-कूद में समय नष्ट होता है और स्वास्थ्य के लिए व्यायाम कर लिया जाए, यही काफी है। पर यह ठीक नहीं। खेल-कूद से स्वास्थ्य तो बनता ही है, साथ-साथ मनुष्य कुछ ऐसे गुण भी सीखता है, जिनका जीवन में विशेष महत्व होता है और जो व्यायाम से नहीं प्राप्त हो सकते, जैसे - घमंड न करना, हारने में साहस न छोड़ना, दूसरे से चोट लग जाए तो उसे सहन कर लेना, विशेष ध्येय के लिए नियमपूर्वक कार्य करना आदि। लोग सफलता न पाने पर साहस छोड़ बैठते हैं और दोबारा प्रयास नहीं करते। परंतु खिलाड़ी ऐसा नहीं करता। हार के बाद भी वह प्रयास करता रहता है कि हारी बाजी जीत लेता है।

दृढ़ संकल्प द्वारा अपने देश की सेवा का मेरा स्वप्न उस दिन पूरा हुआ जिस दिन मैं हेलसिंकी (फिनलैंड) के मैदान में अपनी हॉकी-टीम को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक में जिता सका। उस दिन के 'जन गण मन' का मधुर वादन आज कई वर्ष के पश्चात् भी मेरे कानों में गूँज रहा है।

यूँ तो खेल मेरे सारे कुटुम्ब को प्रिय है, परंतु यह कहना भी आवश्यक है कि मेरे पिता स्वर्गीय राय बहादुर रघुनाथ सिंह खेल में विशेष रुचि रखते थे। मेरे पास बहुत-सी तस्वीरों के साथ एक तस्वीर ढाई साल की उम्र की है जिसमें मैं हॉकी और बॉल लिए बैठा हूँ।

मेरे खेल का प्रारंभ बाराबंकी में हुआ। मेरे बड़ों का कहना है कि कमाई का काफी पैसा मेरे घर के मोटरखाने का फाटक बनवाने में खर्च हुआ, क्योंकि वह हर महीने मेरी हॉकी की गेंद से टूटता था। कुछ ऐसी ही कहानी लखनऊ के कान्यकुब्ज कॉलेज में छात्रावास की दीवारें भी कहती हैं। मुझे यह आज तक ठीक से याद है कि जब मैं बाराबंकी से लखनऊ पढ़ने आया तो मेरे सामान में सबसे अधिक हॉकी स्टिक की महत्ता थी। अपने कॉलेज की टीम में खेलने का मुझे उसी साल सौभाग्य प्राप्त हुआ।



सन् 1936 में मैं देहली के एक टूर्नामेंट में खेलने गया, जिसमें देश के सुप्रसिद्ध मो. हुसैन फुल बैक खेल रहे थे। उस दिन खेल पर मुझे एक सुंदर उपहार मिला। मेरी प्रयास बढ़ता गया। मेरी सदैव इच्छा होती रही कि किस प्रकार खेलूँ कि जिससे के सबसे उच्च स्तर पर पहुँच जाऊँ। सन् 1936-40 में मुझे अपने प्रदेश की ओर का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् 1946-47 में मुझे पहली बार भारत की टीम की ओर से खेलने का अवसर मिला। उस समय पाकिस्तान और भारतवर्ष का विभाजन नहीं हुआ था। सन् 1947 में मुझे खिलाड़ी ध्यानचंद के नेतृत्व में मैं ईस्ट अफ्रीका गया और वहाँ स्थान-स्थान पर कई मैच और उनसे खेल के विषय में बहुत कुछ सीखा। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् 1948 में मुझे में वर्ल्ड-ओलंपिक में खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस खेल में पहली बार भारतवर्ष इंग्लैंड दोनों ने अंतरराष्ट्रीय हॉकी में भाग लिया। अब जब मैं यह लिख रहा हूँ तो मुझे से याद है कि लाखों की भीड़ में भारतवर्ष के थोड़े से आदमियों ने किस तरह से चीख-चीख अपने देश का साहस बढ़ाया था। खेल के शुरू होने के थोड़ी देर बाद जब भारतवर्ष के खिलाड़ी अच्छा खेलने लगे और उन्होंने इंग्लैंड के ऊपर दो गोल कर दिए तो अंग्रेज जनता भी भारत की हर चाल की सराहना करने लगी। खेल समाप्त होने पर हम लोगों को वहाँ से निकलने में दो घंटे से ऊपर समय लगा। इतनी देर में वे लोग भारतीय टीम की प्रशंसा करते रहे कि किसी ने हस्ताक्षर माँगे, किसी ने खाने पर तो किसी ने चाय पर आमंत्रित किया।

सन् 1952 में मेरी मनोकामना पूर्ण हुई। मेरे प्रयास तथा लगन को पुरस्कार मिला और मुझे भारतवर्ष की टीम का नेतृत्व करने का सुयोग मिला। इस बार ओलंपिक के खेल फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी में हुए। मैं एक अजीब परिस्थिति में था। जहाँ एक ओर मेरी मनोकामना पूरी हुई, वहाँ दूसरी ओर इतनी बड़ी जिम्मेदारी से मेरा जी घबराने लगा। परंतु अपने गुरुजनों का आशीर्वाद लेकर मैं लक्ष्य की ओर बढ़ा। कुछ दैनिक पत्रों ने यह घोषणा की कि शायद इस बार भारत विजेता न हो। पर इन बातों से हम लोगों का साहस न छूटा। लगन अवश्य बढ़ गई।

हेलसिंकी में बड़ी ठंडक पड़ती है इसीलिए 20 दिन पहले हम लोगों की टीम डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन पहुँच गई। इसके पश्चात् हम लोग हेलसिंकी पहुँचे। इस देश में एक अजीब बात है। गरमी में वहाँ 20 घंटे दिन रहता है और 4 घंटे थोड़ा-सा अँधेरा और रात। इसके ठीक विपरीत यहाँ जाड़े में लंबी रातें और छोटे दिन होते हैं। हम लोगों को परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने में कुछ समय लगा।

सेमी फाइनल में भारत का सामना ब्रिटेन से हुआ। ब्रिटेन के एक गोल के विरुद्ध भारत ने तीन गोल किए और वह विजयी घोषित हुआ। मुझे आज तक याद है कि सेमी फाइनल के बाद जो दो दिन का अवकाश मुझे मिला, वह किस तरह कटा। परंतु साहस और धैर्य ने साथ नहीं छोड़ा।

फाइनल मैच में हमारी टीम का मुकाबला नीदरलैंड की टीम से हुआ। यद्यपि पहले से ही किसी के मन में संदेह नहीं रह गया था कि विजय—श्री भारत को मिलेगी तथापि नीदरलैंड की टीम ने प्रशंसनीय कौशल का प्रदर्शन किया। खेल आरंभ होने के पंद्रह मिनट तक दोनों टीमों बराबर रहीं। इसके बाद हमारी टीम ने गोल करना शुरू किया और पंद्रह मिनट के अंतराल पर उस पर चार गोल किए। हाफ टाइम के बाद नीदरलैंड की टीम ने और भी चौकस खेल दिखाया और उसने एक गोल भी किया। लेकिन इसके विरुद्ध हमारी टीम ने और दो गोल किए। इस तरह हमने नीदरलैंड के एक गोल के विरुद्ध उसे छह गोल से हराया।

प्रेक्षकों का कहना था कि हमारी विजय का सबसे बड़ा कारण गेंद पर हमारा नियंत्रण था। हमारे खिलाड़ी गेंद को वश में करके उसे केवल 'ड्रिबल' करते या 'पास' देने में ही दक्ष नहीं थे बल्कि दूसरों से प्राप्त गेंद को भी वे बड़ी शीघ्रता और कुशलता से अपने नियंत्रण में कर लेते थे। उनमें यह भी कौशल था कि बहुत संकुचित स्थान में गेंद के साथ पैतरेबाजी दिखा सकते थे। तीसरे, हमारी टीम का हर खिलाड़ी अपने स्थान के महत्त्व को समझता था और उसे प्रतिरक्षा और आक्रमण के मौके की पूरी पहचान थी।

'जन गण मन' हमेशा प्रिय होता है, पर उस दिन की बात और ही थी। आखिरकार वह दिन आया जब मैं 'विकट्री स्टैंड' पर खड़ा हुआ। मैंने अपने भाग्य को सराहा कि हॉकी में विश्वविजयी होने के भारत के गौरव की मैं रक्षा कर सका। उस दिन मुझे यह विश्वास हो गया कि यदि मनुष्य अपना धैर्य और साहस न छोड़े और निरंतर प्रयास करता रहे तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। स्वदेश लौटने पर मुझे 'पद्मश्री' की उपाधि मिली, जिसे मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि मानता हूँ।

'बाबू' के नाम से प्रसिद्ध कुँवर दिग्विजय सिंह (2 फरवरी, 1922—27 मार्च, 1978) का जन्म बाराबंकी जनपद में हुआ। ये हॉकी के ख्याति प्राप्त खिलाड़ी रहे। दिग्विजय सिंह के नाम पर हजरतगंज, लखनऊ में स्थित सेन्ट्रल स्टेडियम का नाम 'के0डी0 सिंह बाबू स्टेडियम' किया गया।



शब्दार्थ

ध्येय	=	लक्ष्य, उद्देश्य	दृढ़ संकल्प	=	पक्का निश्चय
नियंत्रण	=	वश में रखना	व्यवधान	=	बाधा
अंतरराष्ट्रीय	=	संपूर्ण विश्व का	संकुचित	=	तंग / सँकरा

1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए -

- (क) पाठ में खेलकूद के क्या-क्या लाभ बताए गए हैं ?
- (ख) लेखक का स्वप्न कब पूरा हुआ ?
- (ग) "जन गण मन हमेशा प्रिय होता है लेकिन उस दिन की बात और ही थी"। लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है ?
- (घ) लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्या होना आवश्यक है ?

2. तुम्हारी कलम से -

- आपको कौन-सा खेल पसंद है ?
- यह खेल ही क्यों पसंद है ?
- इस खेल को कैसे खेला जाता है ?
- इस खेल को कितने लोग एक साथ खेलते हैं

3. सोहनी ने अखबार को जैसे ही खोला उसमें से एक कागज नीचे गिरा। सोहनी ने उसे उठाया और पढ़ने लगी। आप भी पढ़िए इस कागज पर क्या लिखा था -

तृतीय स्वर्गीय चंद्रिका देवी स्मृति क्रिकेट टूर्नामेंट

समय - प्रातः 8 बजे से

दिनांक - 15 नवंबर, 2021

स्थान - स्पोर्ट्स स्टेडियम, ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद)

आपको यह जानकर अपार हर्ष होगा कि पिछले वर्षों की भाँति इस बार भी स्वर्गीय चंद्रिका देवी की स्मृति में क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन ऊपर दिए गए कार्यक्रम के अनुसार किया जा रहा है। आपसे अनुरोध है कि भारी संख्या में उपस्थित होकर आयोजन की शोभा बढ़ाएं तथा खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करें।

स्वागतोत्सुक

स्वर्गीय चंद्रिका देवी स्मृति क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजन समिति, ठाकुरद्वारा



अब जरा इन सवालों के उत्तर दीजिए -

- कागज में किस बारे में लिखा है ?
- कागज पर लिखी सूचना को पढ़कर सोहनी को क्या करना चाहिए ?
- आपने भी मैदान में अथवा टेलीविजन पर कोई न कोई मैच देखा होगा। उस मैच के बारे में अपने अनुभव संक्षेप में बताइए।

अब करने की बारी :

4.

(क) पता कीजिए और लिखिए -

- हमारे देश का राष्ट्रीय खेल कौन सा है ?
- राष्ट्रीय खेल दिवस कब मनाया जाता है ?
- राष्ट्रीय खेल दिवस किसकी याद में मनाया जाता है ?

(ख) कुछ वर्ष पहले हॉकी पर आधारित एक हिंदी फिल्म आई थी 'चक दे इंडिया'। क्या आपने वह फिल्म देखी है ? नहीं, तो अपने माता-पिता अथवा शिक्षक से अनुरोध कीजिए कि वह कंप्यूटर, प्रोजेक्टर या अन्य किसी माध्यम से आपको फिल्म दिखाएँ। देखने के बाद लिखें -

- फिल्म में किन-किन खेलों की झलक देखने को मिली ?
- फिल्म की कौन-सी दो घटनाएँ आपको सबसे अच्छी लगीं ?
- फिल्म की कौन-सी बातें आप अपने जीवन में उतारना चाहेंगे?

5. मेरे दो प्रश्न : पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.
2.

6. इस पाठ से -

- (क) मैंने सीखा -
- (ख) मैं करूँगी/करूँगा -

